**ओ३म्**

**-आर्ष गुरुकुल पौंधा के वार्षिकोत्सव का दूसरा दिन-**

**“यज्ञ से पूर्व यज्ञ के पात्र स्वयं या अपने पुत्रों से**

**साफ करायें: डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

आर्ष गुरुकुल पौंधा, देहरादून के 18वें वार्षिकोत्सव के दूसरे दिन आज 3 जून, 2017 का कार्यक्रम प्रातः सामवेद पारायण यज्ञ से आरम्भ हुआ और रात्रि वरिष्ठ आर्य कवि श्री सारस्वत मोहन मनीषी जी व अन्य कवियों की कविताओं के पाठ व वाचन के साथ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के बह्मा आचार्य डा. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई हैं तथा यज्ञ में गुरुकुल के चार ब्रह्मचारी वेदमन्त्र पाठ करते हैं। यज्ञ का आयोजन गुरुकुल की भव्य एवं विशाल यज्ञशाला में देश के दूरस्थ स्थानों से आये सहस्राधिक यजमान एवं यज्ञ प्रेमियों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। यज्ञ के पश्चात लोगों ने प्रातराश लिया और पुनः यज्ञशाला में आर्य परिवार सम्मेलन के लिए उपस्थित हुए जिसमें पुरस्कार वितरण एवं पुस्तक विमोचन के कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए। सम्मेलन की अध्यक्षता के लिए स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी से प्रार्थना की गई। संचालन गुरुकुल के लोकप्रिय आचार्य एवं संघर्षशील विद्वान् डा. धनंजय जी ने किया। सम्मेलन के आरम्भ में मंच पर उपस्थित प्रमुख विद्वानों में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी, डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी, डा. रघुवीर वेदालंकार जी, डा. सूर्यादेवी चतुर्वेदा, डा. यज्ञवीर जी, इन्द्रजित देव जी, भजनोपदेशक पं. सत्यपाल पथिक जी तथा श्री मामचन्द जी प्रमुख रूप से शोभायमान थे। गुरुकुल के योग्य स्नातक एवं हरिद्वार एवं दिल्ली में महाविद्यालयों में शिक्षक के रूप में सेवारत डा. रवीन्द्र आर्य एवं श्री अजीत आर्य जी भी मंच पर उपस्थित थे।

सम्मेलन में प्रथम वक्तव्य के लिए स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी को आमंत्रित किया गया। स्वामी जी प्रायः अपने सभी सम्बोधन यज्ञ पर ही देते हैं। उन्होंने कहा कि यज्ञ न करने वाला पाप करता है। इसके उन्होंने अनेक तर्क एवं प्रमाण प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि भोजन व जल से भी अधिक आवश्यक प्राण वायु है। हमारे शरीर से निरन्तर दुर्गन्ध निकलती रहती है जो वायु को प्रदुषित करती है। इससे वायु प्रदुषण होता है। अतः इसका निवारण यज्ञ द्वारा न करने वाला पापी होता है। स्वामी जी ने प्रतिदिन अनिवार्य रूप से प्रत्येक गृहस्थी को यज्ञ करने की प्रेरणा की।

स्वामी जी के बाद आर्यजगत के अनूठे विद्वान, बहुप्रतिभाशाली एवं स्वामी दयानन्द भक्त व प्रशंसक पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी ने श्रोताओं को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि जब ऋषि दयानन्द का पदार्पण हुआ, उस समय देश गहरी दुर्दशा को प्राप्त था। देश की इस दुर्दशा को दूर करने के लिए कोई महापुरुष एवं विद्वान नहीं था। हमें पहले मुगलों ने और उसके बाद अंग्रेजों ने गुलाम बनाया। ऐसी परिस्थितियों में ऋषि दयानन्द ने देश और समाज के स्वाभिमान को जाग्रत किया। आचार्य पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी का भाषण अलंकारिक भाषा में था। शब्द पूर्ण संस्कृतनिष्ठ एवं भाषा गद्य होते हुए भी काव्य के श्रेष्ठ गुणों से युक्त तथा आत्मा को झकझोर कर रख देने वाली थी। हर श्रोता उनके एक एक शब्द से आकर्षित एवं खींचा हुआ था। हमने जीवन में शताधिक विद्वानों को सुना है परन्तु हम निष्पक्ष एवं निःसंकोच भाव से यह मानते हैं कि उनकी जैसी भाषा का प्रयोग करने की क्षमता हमारे इतर किसी विद्वान में दृष्टिगोचर नहीं होती। हमारे अनेक मित्रों व श्रोताओं की भी यही राय है जो हमें इस बारे मे बताते रहते हैं।

डा. सूर्यादेवी जी ने भी अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि हमें अपने व दूसरों के परिवारों को आर्य बनाने की चुनौती मिली हुई है। जन्म दिन मनाते हुए मोमबत्तियों को बुझाने की प्रथा को उन्होंने अनुचित बताया और इसे प्रकाश से अन्धकार की ओर जाने वाला कार्य कहा। उन्होंने कहा कि सभी प्रसन्नता के अवसरों पर देवयज्ञ अग्निहोत्र सबको करना चाहिये, इससे परिवार में अच्छा वातावरण बनेगा। उन्होंने यह भी कहा कि परिवार के प्रत्येक सदस्य, मुख्यतः गृहिणी को प्रातः काल उषा वेला के आरम्भ के समय में अवश्य उठ जाना चाहिये और परिवार में प्रातः सायं सामूहिक सन्ध्या भी की जानी चाहिये। ब्रह्मचारी अनिकेत ने सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास के आधार पर अपने विचारों को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत किया। उन्होंने पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जी के अनेक बार सत्यार्थप्रकाश पढ़ने की चर्चा की और कहा कि उन्होंने कहा था कि सत्यार्थ प्रकाश ऐसा मूल्यवान ग्रन्थ है कि जिसे वह अपनी सारी सम्पत्ति बेचकर खरीदते तो भी यह सौदा सस्ता सौदा होता।

आर्यजगत के उच्चकोटि के विद्वान, वाणी के जादूगर एवं अतीव प्रभावशाली वक्ता डा. ज्वलन्तकुमार शास्त्री जी ने कहा कि ऋषि के प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका एवं संस्कारविधि सहित अन्य सभी ग्रन्थों का भी सभी को अध्ययन करना चाहिये। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों के जो नामकरण किये हैं वह सर्वोत्तम हैं। सत्यार्थप्रकाश व ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रन्थों का उन्होंने जो नाम रखा है इससे इतर अन्य कोई सार्थक हो ही नहीं सकता। उनके द्वारा रखे गये सभी नाम सर्वोत्तम हैं। विद्वान वक्ता ने सबको प्रतिदिन यज्ञ करने की प्रेरणा की। उन्होंने एक मुख्य बात यह कही कि यज्ञ के पात्रों को स्वयं या अपने बच्चों से साफ कराना चाहिये, नौकरों से नहीं। इससे बच्चों पर अच्छे संस्कार पड़ते हैं। इससे सम्बन्धित उन्होंने हिन्दी साहित्यकार डा. नगेन्द्र के बचपन के एक बहुत प्रभावशाली उदाहरण को प्रस्तुत किया जिसमें उनके पिता उन्हें आर्यसमाज में यज्ञ के आरम्भ से पूर्व जाकर यज्ञ के पात्रों को साफ करने की आज्ञा देते थे। पुत्र के मुंह से इस विषय में कुछ विपरीत विचार जानने पर उन्होंने कहा था कि हमारे माता-पिता हमसे हुक्का भरवाते थे तथा हम अपने पुत्र से यज्ञ के पात्र साफ कराते हैं। काश उन्हें अर्थात् नगेन्द्र जी के पिता को भी अपने माता-पिता से यज्ञ के पात्र साफ करने को का जाता तो उनके जीवन का रंग व ढंग कुछ और होता। इस घटना का डा. नगेन्द्र जी के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा था और उन्होंने इस संस्मरण का स्वलिखित साहित्य में उल्लेख किया है। डा. नगेन्द्र ने लिखा है कि उनके पिता ने उनसे यज्ञ के पात्र साफ कराये, वेदमंत्र याद कराये जिससे वह संस्कृत विद्वान बन सके। उन्होंने अपने पिता के प्रति यज्ञ के पात्र साफ कराने और यज्ञमय वातावरण देने के लिए धन्यवाद किया है।

कार्यक्रम में डा. रघुवीर वेदालंकार जी की एक नई पुस्तक **‘साधना सूत्र’** का परिचय दिया गया। आचार्य रघुवीर जी ने पुस्तक का परिचय देते हुए उस पर प्रभावशाली सम्बोधन दिया। उन्होंने कहा कि इस पुस्तक में विषय के अनुरुप वेदों के प्रमाण हैं और उनके अनुभव समन्वित हैं। उन्हें इस पुस्तक को लिखने में आनन्द आया है। सभी विद्वानों ने मिलकर पुस्तक का लोकार्पण किया। गुरुकुल के विशेष प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थियों श्री विजय आर्य शास्त्री, श्री सुनील कुमार आर्य, श्री शिवकुमार आर्य तथा श्री शिवदेव आर्य को अभिनन्दन पत्र एवं नगद धनराशि भेंट कर सम्मानित भी किया गया।

आज के कार्यक्रम में पेट्रोलियम विश्वविद्यालय के डीन श्री अरुण कुमार घन को आमंत्रित किया गया था। आचार्य धनंजय ने उनका परिचय दिया और बताया कि वह गुरुकुल को सहयोग करने के लिए तैयार रहते हैं। स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने अध्यक्षीय भाषण देते हुए कहा कि परिवार के मुख्या को सम्मान देने सहित वैदिक परम्पराओं को यदि परिवार में सुरक्षित रखा जाये तो इससे हमारा कल्याण होगा। स्वामी जी ने कहा कि आजकल परिवार के वृद्धजन परिवार के सदस्यों द्वारा उपेक्षित किये जा रहे हैं। उन्होंने परिवार के वृद्धजनों का सम्मान करने और उनका आशीर्वाद लेते हुए जीवन व्यतीत करने की सलाह दी। इसी के साथ भोजन से पूर्व सत्र का समापन हुआ।

अपरान्ह 3.00 बजे से आचार्य डा. सोमदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ आरम्भ हुआ। यज्ञ के अनन्तर एक मंत्र की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि परमात्मा को वरुण इसलिए कहा जाता है क्योंकि वह दुःखों से हमारी रक्षा करता है। परमात्मा हम सब पर सुखों की वर्षा भी करता है इसलिए हमें प्रतिदिन ईश्वर की उपासना एवं यज्ञ करना चाहिये। इसके बाद ब्रह्मचारी मुकेश का एक भजन हुआ। भजन के बाद **‘विद्या-व्रत सम्मेलन’** आरम्भ हुआ। अध्यक्ष ऋषि भक्त, आर्य विद्वान एवं दानवीर ठाकुर विक्रम सिंह को बनाया गया। **मुख्य अतिथि उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति श्री पीयूष कान्त दीक्षित थे।** चार ब्रह्मचारियों ने गायत्री मन्त्र को अनेक विकृति पाठों में गाकर **‘मंगलाचरण’** के रूप में प्रस्तुत किया। स्वागत-गीतिका **‘हम अपने प्रिय मेहमान का अभिनन्दन करते हैं’** 5 ब्रह्मचारियों ने गाकर प्रस्तुत की। ब्रह्मचारी अद्वितीय, कक्षा 8 ने सत्यार्थप्रकाश के महत्व पर तथ्यात्मक प्रभावशाली व्याख्यान प्रस्तुत किया। ब्रह्मचारी बृजकिशोर आर्य ने सत्यार्थप्रकाश के आधार पर विद्या-अविद्या एवं बन्धन व मोक्ष पर प्रभावशाली, तथ्यात्मक एवं सारगर्भित व्याख्यान दिया जिसके लिए लोगों ने करतल ध्वनि द्वारा एवं नकद धनराशि देकर उन्हें पुरस्कृत किया। इसके बार चार बच्चों ने एक गीत प्रस्तुत किया। ब्र. कैलाश ने सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास पर आधारित सारगर्भित एवं प्रभावशाली व्याख्यान दिया जिसमें उन्होंने ऋषि द्वारा खण्डित सभी मतों को बहुत तथ्यात्मक एवं प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया। ब्र. भानुप्रताप आर्य ने सत्यार्थप्रकाश के तेरहवें समुल्लास पर प्रभावशाली एवं सुन्दर वाक्यरचना में स्मरण किया हुआ सम्बोधन दिया जो बहुत सराहनीय था।

गुरुकुल की ओर से वेद विदुषी आचार्य डा. सूर्यादेवी चतुर्वेदा का सार्वजनिक अभिनन्दन विधि विधान पूर्वक किया गया। यह अभिनन्दन आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान पं. राजवीर शास्त्री के परिवार द्वारा प्रदत्त निधि से किया जाता है। गुरुकुल के दो ब्रह्मचारियों ने डा. यज्ञवीर द्वारा संस्कृत में लिखा गया काव्यात्मक अभिनन्दन गीत गाकर प्रस्तुत किया जिसे सुनकर विद्वान व सभी श्रोता आश्चर्यान्वित हुए। डा. सूर्या जी को शाल, माला, अभिनन्दन पत्र सहित नगद धनराशि भेंट की गई। आचार्य सूर्या जी ने इस सम्मान के लिए गुरुकुल व समारोह में उपस्थित सभी विद्वानों एवं श्रोताओं का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद किया। इसके बाद गुरुकुल के उत्सव के उपलक्ष्य में प्रकाशित आर्ष ज्योति मासिक पत्रिका विशेषांक, वैदिक मन्तव्य एवं उणादिकोष ग्रन्थों का लोकार्पण भी सम्पन्न किया गया।

आयोजन में पधारे उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति श्री पीयूष कान्त दीक्षित को भी उत्सव में सम्मानित किया गया। आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी ने उनके सम्मान में एक धारा प्रवाह अलंकारिक भाषा में विस्तृत उपदेश किया। उनका वक्तव्य अत्यन्त प्रभावशाली था। कुलपति, सभी विद्वान एवं श्रोतागण उनका सम्बोधन सुनकर उनके प्रति आकर्षित होने के साथ उनकी प्रभावशाली अलंकारिक एवं काव्यात्मक गुणों का प्रभावकरने वाली वाणी व शब्दावली को सुनकर भाव विभोर एवं हतप्रभ रह गये। हमें भी उनका व्याख्यान अति प्रिय एवं प्रभावशाली लगा। अगर हम कहें कि सभी श्रोता उनके विचार सुनकर स्वयं को भाग्यशाली अनुभव करते थे तो अत्युक्ति न होगी। उनके कुछ शब्द थे **‘वाणी व्याकरण से शोभा को प्राप्त होती है। एक ही योग्य पुत्र से पूरा कुल शोभा को प्राप्त होता है।’** राम के राज्याभिषेक का भी आपने जिस शब्दावली में चित्र खींचा वह स्वर्गीय आनन्द कराने वाला था। ब्रह्मचारियों को सम्मानित होते देख स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी द्वारा आंखे खोलने व बन्द करने की भी आपने बहुत प्रभावशाली मीमांसा की। ब्रह्मचारियों की योग्यताओं का प्रभावशाली वर्णन भी आपके जादू का सा प्रभाव करने वाले शब्दों में हुआ। कुलपति जी से उन्होंने गुरुकुल में **‘दयानन्द चेयर’** स्थापना करने व कराने में सहयोग की मांग की। स्वामी शंकराचार्य और स्वामी दयानन्द के वैदिक धर्म व संस्कृति की रक्षा में योगदान को भी बहुत प्रभावषाली शब्दों में प्रस्तुत किया गया। अपने उत्तर में कुलपति महोदय श्री पीयूष कान्त दीक्षित जी ने गुरुकुल आकर और कार्यक्रमों की प्रस्तुतियों को देखकर उन पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने अपने सम्बोधन के आरम्भ में कुछ देर तक संस्कृत में भाषण दिया। उन्होंने बताया कि संस्कृत का प्रचार प्रसार करने के लिए उन्होंने संकल्प लिया है कि वह जब भी किसी कार्यक्रम में बोलेंगे तो उसका आरम्भ संस्कृत में बोलकर ही करेंगे। आर्यसमाज के कार्यों की उन्होंने सराहना की। उन्होंने बतया कि वाराणसी में उनका निवास पाणिनी कन्या गुरुकुल, वाराणसी के पास था और वह प्रातः गुरुकुल में होने वाले वेदपाठ को सुनकर ही जागते थे। उनके पिता भी गुरुकुल के अनुरोध पर वहां यदा-कदा पढ़ाने जाते थे। उन्होंने बताया कि उनके पिता का कहना था कि आर्यसमाज ने हिन्दू धर्म की रक्षा का कार्य किया है। गुरुकुल में दयानन्द चेयर की स्थापना के लिए उन्होने अपना समर्थन व्यक्त किया और कहा कि वह इसके लिए जो कुछ भी कर सकते हैं, करेंगे। उन्होंने व सभी विद्वानों से आशा व्यक्त की कि यूजीसी से मिले आश्वासन को देखते हुए आगामी कुछ महीनों में गुरुकुल में दयानन्द पीठ की स्थापना हो जायेगी। कुलपति महोदय ने उत्तराखण्ड राज्य की दूसरी भाषा संस्कृत को व्यवहारिक रूप में लागू करने के लिए अपने विधायको व सांसदों पर अपने प्रभाव का प्रयोग करने का परामर्श दिया। संस्कृत राज्य की दूसरी भाषा है परन्तु उसका व्यवहार कहीं किसी को दिखाई नहीं देता। इसके उन्होंने उदाहरण भी दिए। आचार्य धनंजय जी ने कुलपति जी को गुरुकुल में पधारने और अपना बहुमूल्य समय देने के लिए धन्यवाद किया। आचार्य रवीन्द्र आर्य ने कुलपति महोदय के सम्मान में संस्कृत में कुछ काव्यात्मक पंक्तियां कार्यक्रम में बैठे बैठे लिखीं। उन्होंने उसका वाचन भी कुलपति महोदय को सम्बोधित करते हुए किया।

गुरुकुल केद कुछ सफल स्नातक छात्रों ने स्वामी प्रणवानन्द जी, आचार्य धनंजय जी और आचार्य चन्द्रभूषण शास्त्री जी का सम्मान किया और अपनी ओर से उन्हें कुछ भेंट स्वरूप वस्तुएं प्रदान कीं। विद्या-व्रत सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषण में ठाकुर विक्रम सिंह जी ने कुलपति जी के ओजस्वी व तेजस्वी विचारों की प्रशंसा की। उन्होंने प्रभाव व भावपूर्ण शब्दों में कहा कि देश में गोहत्या बन्द होनी चाहिये और देश की सीमाओं की हर कीमत पर रक्षा होनी चाहिये। इसी के साथ विद्याव्रत सम्मेलन सहित अनेक आयोजन सम्पन्न हुए। रात्रि को आर्यकवि श्री सारस्वत मोहन मनीषी जी की अध्यक्षता में कवि सम्मेलन भी सम्पन्न किया गया। गुरुकुल में इस बार पूर्व की अपेक्षा अधिक ऋषिभक्त श्रद्धालु पधारे हुए हैं जिनकी संख्या सहस्राधिक है। सबके लिए भोजन आदि की अच्छी व्यवस्था है। अनेक पुस्तक विके्रता एवं इतर सामग्री भी गुरुकुल परिसर में उपलब्ध है। उनके स्टाल भी वहां लगे हुए हैं जहां लोग इच्छित वस्तुएं खरीदते हैं। आज का कार्यक्रम भी प्रभावशाली एवं पूर्ण सफल रहा। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**